International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 29-01-2021; Accepted: 14-02-2021; Published: 12-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 27-29

हिंदी सिनेमा और हाशिए का समाज

सचिन मदन जाधव
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सद्गुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड जिला– सातारा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
फिल्म का केंद्रीय विषय पुराणों मे वर्णित तथा इतिहास में अंकित वर्ण व्यवस्था तथा इस व्यवस्था के अंतिम चरन पर स्थापित शुद्र की इसी वर्ण व्यवस्था के कारण निर्मित पीडा है। हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था की भयावहता फिल्म में दर्शायी है। इस फिल्म में हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था का दंश भुगत रही शुद्र जाति का करूणाजनक चित्रण किया है। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वर्णों की बाहयाडंबरता को रेखांकित करते हुए उनके द्वारा शुद्रों का किस प्रकार शोषण किया जाता है इसके प्रतिनिधिक उदाहरण प्रस्तुत किए है। 'शुद्र–द रायजिंग' सिनेमा का विकास समस्याएँ, जटिलताएँ और समाधान इन तीन चरणो में दिखाई देता है। फिल्म के प्रथम दृश्य में ही शुद्रों को अधनंगी तथा दयनीय अवस्था में कमर में झाड व गले में हाँडी बांधकर चलते हुए दिखाया है । कुछ ही क्षणो में ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण के प्रतिनिधियों की दहशत के दर्शन होते है।

मूलशब्द: हिंदी सिनेमा और हाशिए का समाज 'शुद्र–द रायजिंग' के विशेष संदर्भ में

प्रस्तावना
हिंदी सिनेमा इन दिनों उत्कर्ष के शिखर पर विराजमान दिखाई देता है । परिपाटी से हटकर नए नए तकनीकी प्रयोग हिंदी सिनेमा में हो रहे हैं। यह प्रयोग मात्र तकनीक तक सीमित न रहकर सिनेमा की विषयवस्तु में भी व्याप्त दिखाई देती है। इसलिए मनोरंजन का प्रमुख माध्यम माने जानेवाला यह सिनेमा विभिन्न स्तर की समस्याओं को अपने में समेटे हुए हैं। उसे दर्शकों के संमुख उघाडकर रख देने में अपनी विशिष्ट शैली व प्रभावकारिता के दर्शन कराता है। हिंदी सिनेमा अब लडको–लडकियों के प्रेम को दिखाकर अपना पेट पालनेवाली उदयोग मात्र नहीं रहा है । नित नवीन प्रयोग हिंदी सिनेमा के नवीन रूपो के दर्शन कराते है । यहाँ ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, राजनीतिक, उद्योग, कला, राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय समस्याएँ, समाज सुधारकों की जीवनियाँ आदि सभी प्रकार के विषयों को केंद्र मे रखकर सिनेमा का निर्माण होता है । इसी का परिणाम यह रहा कि समाज जीवन के संवेदनशील मद्दो को भी सिनेमा ने अविष्कार का साधन बनाया और उसे विभिन्न वर्गो तक पहुँचाने का काम किया है। इस क्षेत्र में मधुर भांडारकर जैसे निर्देशको ने अपनी विशेष पहचान बनाई हैं जिन्होंने डान्स बार में नाचनेवाली लडकियों (चांदनी बार) से लेकर (ट्राफिक) सिग्नल पर खडे भिखमंगो तक को अपने सिनेमा में केंद्रीय विषय बनाया है।

समाज के भिन्न–भिन्न रूप, भिन्न–भिन्न प्रकार की मनोवृतियो को बॉक्स ऑफिस के पर्दे का विषय बनाना इसमें नवीनता तो है ही लेकिन एक बडा जोखिम भी रहता है। यह प्रश्न मात्र नवीनता या कलात्मकता का नहीं बल्कि व्यावसायिकता का भी है। लागत मूल्य की वापसी, साथ में मुनाफा आदि के गणिती सिध्दांत के बगैर फिल्म बनाना बहुत बडा खतरा उठाना है । इसलिए नए विषयों को फिल्म की विषयवस्तु बनाने से पहले दर्शकों की रूचि को ध्यान में रखा जाता है। यही कारण है कि बहुसंख्य दर्शको की सोच के विपरित सोच वाला सिनेमा दर्शकों को परोसना कठीन है। ऐसे सिनेमाओं में विषय वस्तु का गठन तथा कलात्मकता दोनों सटीक होना आवश्यक है। ''हर समाज मे व्याप्त कुछ धार्मिक तत्व रीति रिवाज, त्योहार तथा धार्मिक परंपराए हर व्यक्ति को प्रभावित करती है। ये धार्मिक आस्था, प्रथा, विश्वास व्यक्तियों की जीवन शैली के साथ उनकी विचारधारा को प्रभावित करते है।- यही आस्था और अनास्था उनके चरित्र एवं व्यवहार को सुनिश्चित करती है।''[1] व्यक्ती की आस्था तथा अनास्था पर चोट करने वाले सिनेमा विवादों से घीरे रहते हैं। विवादों से घिरना व्यावसायिकता के नियमित माणदंडो के विपरित है। इसलिए फिल्म निर्माता तथा निर्देशक इससे बचते है।

अक्तूबर 2012 में रिलिज हुई फिल्म 'शुद्र–द रायजिंग' ऐसी ही एक लीक से हटकर बनाई हुई फिल्म है, जो निर्माण काल से लेकर प्रदर्शन तक विवादों से घिरी रहीं । फिल्म का केंद्रीय विषय पुराणों मे वर्णित तथा इतिहास में अंकित वर्ण व्यवस्था तथा इस व्यवस्था के अंतिम चरन पर स्थापित शुद्र की इसी वर्ण व्यवस्था के कारण निर्मित पीडा है। हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था की भयावहता फिल्म में दर्शायी है। अपनी इस फिल्म कें संदर्भ मे स्वयं निर्माता, लेखक, निर्देशक संजीव जायसवाल कहते है ''यह एक ऐसा प्रयास है कि समानता, मानवता हो; एक संदेश देता है कि जातियता समाज के लिए विष समान है।''[2] इस फिल्म में हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था का दंश भुगत रही शुद्र जाति का करूणाजनक चित्रण किया है। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वर्णों की बाहयाडंबरता को रेखांकित करते हुए उनके द्वारा शुद्रों का किस प्रकार शोषण किया जाता है इसके प्रतिनिधिक उदाहरण प्रस्तुत किए है। 'शुद्र–द रायजिंग' सिनेमा का विकास समस्याएँ, जटिलताएँ और समाधान इन तीन चरणो में दिखाई देता है। फिल्म के प्रथम दृश्य में ही शुद्रों को अधनंगी तथा दयनीय अवस्था में कमर में झाड व गले में हाँडी बांधकर चलते हुए दिखाया है । कुछ ही क्षणो में ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण के प्रतिनिधियों की दहशत के दर्शन होते है। पूरी फिल्म इसी प्रतिनिधिक घटनाओं का कथा विस्तार है।

'शुद्र–द रायजिंग' फिल्म में शोषण की दाहकता के स्तर को निरंतर उच्चतर स्तर तक ले जाने के लिए वर्ण व्यवस्था के क्रम को उलटा करके दिखाया है। वर्ण व्यवस्था में तीसरे स्थान पर खडे वैश्य की शुद्र के प्रति नीति को प्रथम दर्शाया है। जिसमें एक बनिया महिला से दिनभर काम करने के पश्चात भी एक मुठ्ठी अनाज के लिए तरसाता है। अपमानजनक शब्दों के प्रयोग के साथ उस पर चिल्लाता है, जिससे भयभीत होकर एक नोकर

के हाथ से दुध का मटका फूट जाता है। क्रोधित होकर बनिया उसे मजदुरी न देने की बात करता है। वैश्यों द्वारा शुद्रों का आर्थिक शोषण होता रहा है । पेट की आग से बेबस शुद्र ईश्वर की दुहाई देकर बनिए से केवल एक वक्त के लिए भी अपर्याप्त हो इतना ही अनाज प्राप्त कर सकते। इस अनाज प्राप्ती में आत्मसम्मान की बलि दी जाति। फिल्म में निश्चित कालखंड का वर्णन तो नहीं किया लेकिन साधारणता मध्ययुगीन काल रहा होगा । मध्ययुगीन काल के शुद्रों की यथार्थता को दर्शाता यह प्रसंग बहुत रंजक दंग से प्रस्तुत किया है। परंतु इससे समस्या की गंभीरता कम नहीं होती। इस समस्या पर भाष्य करते हुए विभांशु दिव्याल कहते है, ''बहुसंख्य दलितों के लिए इज्जत की रोटी अभी दूर का सपना है। कभी रोटी के संघर्ष मे उन्हें इज्जत दाँव पर लगानी पडती है और इज्जत के संघर्ष के लिए रोटी दाँव पर लगानी पडती है।''[3] वैश्यों द्वारा किया गया शोषण आर्थिक शोषण था जिससे इनका शारीरिक शोषण भी होता। श्रम पश्चात भी हक की रोटी उन्हें नसिब न होती।

अन्न व पानी जैसी मुलभूत शारीरिक अवश्यकताओं के लिए भी शुद्रों को बहुत तरसना पडता। एक शुद्र की आपबीति का पूर्वदीप्ती शैली (फ्लैश बॅक) में चित्रण किया है। वह युवक अपने बुजुर्ग पिता के साथ पैदल चल रहा था। कडी धुप और अधिक चलने से बुजुर्ग प्यास से तडप उठा। युवक अपने पिताजी के लिए हाँडी में पानी लाने के लिए के लिए तालाब किनारे पर पहुंचा तब वहाँ सवर्णों के बच्चे तैर रहे थे, साथ में उनके परिवार के मुखिया भी थे। शुद्र युवक द्वारा पानी के लिए याचना करते पर भी उन्होंने पानी तो नहीं दिया लेकिन उसकी याचना का मजाक बना दिया, उसकी हाँडी तोड दी। साथ ही पिटाई भी की। युवक जब तक उस टूटी हुई हाँडी में पानी लाता तब तक उस बुजुर्ग पिता की मृत्यु हो चुकी थी। युवक पिता की मृत्यु के लिए अपने आपको कुसुरवार मानते हुए स्वयं को कोसता है, ''हाय रे माय करम लोग तो अंतिम घडी में गंगाजल पिलावत है और एक हम अभागा तुमको दुई बूँद पानी ना पिलावत सके है।'' [4] उसका अपने आपको कोसना तथा अपने कर्मों को दोष देना हिंदू धर्म के कर्म सिद्धांत का बहुत गहरा प्रभाव दर्षाता है। इसकी पैठ इतनी गहरी है कि सहज रुप से मानवी व्यवहारों में उसके दर्शन होते है। जिन शुद्रों को यातनाएँ दी वे भी उसी धर्म पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप में विश्वास करते है। विभांशु दिव्याल के मतानुसार ''धर्म आज भी दलित के गले की हड्डी बना हुआ है, जिसे न वे निगल पा रहें है न उगल पा रहें है। [5] दैवनिंदा करके वे उसी पर अपना विश्वास दिखाते हैं। भावना के आँसू बह जाने पर वह युवक क्रोधित हो उठता है और सभी स्थितियों को धिक्कारते हुए कहता है, ''थू है ऐसे पानी पर जो मराई खातीर नही बना... अरे पानी पानी नाय जो पानी मराई के काम ना आए, वो पानी नाय, मूत है मूत।''[6] बुजुर्ग पिता की पानी के अभाव में हुई मृत्यु शुद्र युवक में व्यवस्था विरोधी उठान का बीज बो देती है।

द्वितीय प्रसंग में रास्ते पर चलते समय एक शुद्र युवा स्त्री पर ठाकूर की नजर पड जाती है और वह इशारे से ही अपने सेवक के जरिए उसके पति को आदेश भरा संदेश भेजता है कि रात को वह अपनी इस युवा पत्नी को हवेली में भेज दें। साधारणता इस प्रकार की इच्छा रखना अनैतिकता तो है ही परंतु 'शुद्र.द रायजिंग' फिल्म में जिस तरीके से यह फिल्माया गया है उससे यह स्पष्ट होता है कि ठाकूर के लिए इस प्रकार का व्यवहार कोई नई बात नहीं है। बेचारा पति दिनभर चिंतित रहता है। पत्नी सहमी रहती है। एक सहेली उसे धाडस बंधाने का काम करती है उसी समय एक अधेड स्त्री के संवाद इस धाडस बंधाने की निर्रथकता को स्पष्ट करते है ''क्यों री, उसे काहे झूठ दिलासा दे रही है, भूल गई जुगुनु के साथ क्या हुआ था। अरे उसने जाने से मना कर दिया तो ठाकूर ने उसे पूरे गाँव में नंगा करके घुमाया था।...ठाकूर ही हमारे भगवान है। उनकी कही हुई हर एक बात पत्थर की लकीर हैं यह जानलो। नहीं तो सबको मुसीबत में डाल दोगी।''[7] इससे स्पष्ट होता है कि शुद्र स्त्रियों को शुद्र होने तथा स्त्री होने की दोहरी मार पडती थी। साथ ही ठाकूर की इच्छा ही सब कुछ है और उसके विरोध के परिणाम भयंकर थे। अधेड स्त्री का अंतिम वाक्य इस बात ओर भी इशारा करती है कि बाकी को बचाने के लिए तुझे यह स्वीकार कर लेना चाहिए। जिन शुद्रों की परछाई भी सवर्णों को स्वीकार नहीं थी उन्हीं की स्त्रियों से संबंध बनाने में इन्हें कोई हर्ज नहीं और तब न ही इनका धर्म भ्रष्ट होता है। अपनी पत्नी संदला को बचाने के लिए पति चरना जी–जान की बाजी लगाकर विरोध करता है। उसे बहुत पिटा जाता है और संदला को ले जाया जाता है। चरणा की पिटाई के पश्चात उपस्थित नायक बाला द्वारा 'किसने पिटा ?' सवाल पूछने पर चरना के पिता का जवाब बडा मार्मिक तथा शुद्रों की वास्तविकता को दर्शानेवाला है, ''हम पैदा होते ही मारे जाने के लिए, चाहे ठाकूर मारे, चाहे बीमारी । हम शुद्रन के भाग में पता नही हैं क्या लिखा है ? पैर रगड–रगड कर मरना लिखा है।'' [8] उनकी यह प्रतिक्रिया शुद्रों के इतिहास तथा सवर्णों की ज्यादती को दर्शाता है।

ठाकुर द्वारा संदला के साथ स्थापित व्यवहार उसकी वासनांधता, विलासिता को दर्शाता है साथ ही संदला के देह को निहारते हुए यह कहना ''मुझे आज तक कोई नहीं बता पाया कि कमल कीचड मे क्यो खिलता है ?''[9] शुद्रों के प्रति तुच्छता का भाव और उन्हीं की स्त्रियों के प्रति आसक्ति भाव को प्रकट करता है। सुबह संदला वापस लौटने पर जब पति चरना को मृत्यशय्या पर देखती है तो वह उसके रक्षा की भीख मांगने पुनः हवेली पहुँचती है तो ठाकूर उसे धक्के देकर निकलवाते हुए कहता है ''भोर मे सूर्य पूजन किया जाता है, मदिरा सेवन नहीं भगा उसको।'' [10] ये सारे प्रसंग वर्ण व्यवस्था से प्राप्त धिठाई तथा उपभोग पश्चात वस्तु की तरह फेंक देने की मानसिकता दर्शाते हैं साथ ही इस प्रसंग मे क्षत्रियों द्वारा होनेवाला शारीरिक शोषण तथा हिंसा दिखाई है।

तीसरे प्रसंग में ब्राह्मणों के खेतो में काम कर रहें शुद्र दंम्पति का छोटा बच्चा उसी खेत के किनारे खेल रहा था। पास ही ब्राहमणों के बच्चे गुरू सानिध्य में 'ओम नमः शिवाय' का जाप कर रहें थे। शुद्र बच्चा अपनी धून में खेल रहा था और फिर जाप कर रहे बच्चो की ओर देख रहा था। खेलते–खेलते बच्चा भी वह मंत्र दोहराने लगता है। वह छोटा बच्चा जब अपने घर वापस आता है और आंगन मे खेल रहा है। खेलते हुए वह 'ओम नमः शिवाय' के मंत्र को दोहरा रहा है उसी समय ब्राहमण पंडितो का पंडाल वहाँ से गुजर रहा था। एक शुद्र बालक द्वारा मंत्रो का जाप करना उनके वर्णवादी मानसिकता के विपरीत था। प्रमुख पंडित क्रोधित होकर प्रतिक्रिया देते हुए कहते है ''महामंत्र का जाप, शुद्रों के लिए महापाप है।''[11] साथ ही इस महापाप के कारण गाँव में अकाल तथा महामारी फैलने की भविष्यवाणी भी करते हैं। गाँव के मुखिया के जरिए पंचायत बुलाई जाती है और पंचायत में ब्राम्हण पंडीत को अंतिम निर्णय का अधिकार दिया जाता है। प्रमुख पंडीत जिस जिव्हा ने यह तथाकथित महापाप किया है उसे काटने का निर्णय सुनाते है। बच्चे के माता–पिता द्वारा गिडगिडाने पर भी बच्चे को नहीं बक्षा जाता और बच्चे की जिव्हा काट दी जाती है। इस यातना को सहन न कर सकने की वजह से बच्चे की मृत्यु हो जाती है । फिल्म में बच्चे को दिया गया यह शासन बहुत ही दर्दनाक प्रसंग है, साथ ही दर्शकों की मानसिकता तथा संवेदना को झकझोर देता है। नेपथ्य में प्रस्तुत गीत – ''इस बच्चे के रक्त से, लिख दो वेदों और पुरानों में किसका किसका नाम लिखा है, धर्म धनुष के बाणों में''[12] मर्माहत कर देता है।

पानी के अभाव में बुढे पिता की मृत्यु, संदला पर बलात्कार के

साथ चरना की पिटकर की गई हत्या, और धर्म के नाम पर बच्चे की बलि आदि से पीडित शुद्र परिवारों के युवकों में विद्रोह की भावना बलवती होती गई। वर्ण व्यवस्था से दबे हुए युवक की असहायता उन्हें संगठित कर देती हैं, और उनका विद्रोह फूटता है ठाकुर के बेटे सत्यपाल पर। सत्यपाल की हत्या कर के वे अपने पर हुए अन्याय का बदला लेते हैं। ये शुद्र युवक इस बात से भी अवगत थे कि इसके परिणाम भयंकर होंगे, फिर भी बरसों से सहा हुआ अन्यास और पिडा उन्हे बेखौफ बनाती है। सत्यपाल की हत्या उसके पिता ठाकूर द्वारा संदला पर किए गए बलात्कार का बदला था। उसे मारने के पूर्व उसकी जिव्हा काट दी जाती है, यह बालक की हत्या का बदला था और अंत में उसकी लाश पर पेशाब करना बिना पानी के पिता को तडपाकर मरने के लिए बाध्य करनेवाले सवर्णों के प्रति दी गई प्रतिक्रिया है। फिल्म में दर्शायी शुद्र युवकों की प्रतिक्रिया एक सामाजिक क्रांति थी। फिल्म में समस्या के समाधान के रुप में इसे प्रस्तुत किया है। शायद फिल्म निर्देशक अन्याय ग्रस्त शुद्रों को फिल्म की मर्यादा मे रहकर न्याय दिलाना चाहते थे। इसलिए इस प्रकार की प्रतिक्रिया दर्शायी है। ''इतिहास इस बात का समर्थन करता है कि समुन्नत देशों में राजनीतिक क्रांतियों से पहले सामाजिक और धार्मिक क्रांतियाँ हुई है।''[13] परंतु इस प्रतिक्रिया रुपी हत्या के पश्चात शुद्रों पर कहर बरसता है। ठाकूर के शब्द – ''मुझे इस गाँव मे अब एक भी शुद्र जिंदा नही चाहिए, सबको जिंदा जलाओ।''[14] संवर्णों के अहम् पर लगी चोट को दर्शाता है शुद्रों की बसती में आग लगाई जाती है। भाग रहें शुद्रों को मार दिया जाता है, उनकी बहु बेटियों को उठाया जाता है। शुद्र भी अब मरने–मारने पर उतर आते है। फिल्म में नरसंहार का करुण जनक दृश्य उभरा है। अनाथ बच्चों का करुण विलाप वातावरण को अधिक गंभीर बनाता है।

फिल्म के आरंभ में डॉ. बाबासाहब आबेंडकर का धर्म संबंधी विचार- 'धर्म मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं।' धर्म के व्यवस्थागत रुप को नकारता है। तथा धर्म की स्थूलता को नकारते हुए उसकी सूक्ष्मता की और इशारा करता है। फिल्म के अंत में दलित चेतना को जगाने वाला 'जय जय भीम' गीत दिखाया है । डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के सामाजिक, दलित उध्दारक कार्यों को दिखाया गया हैं, जो आंबेडकरी विचारधारा की श्रेष्ठता सिध्द करता है। हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था तथा शुद्रों की दयनीय स्थिति को केंद्र में रखकर निर्मित 'शुद्र–द रायजिंग' फिल्म विवादास्पद रहीं । विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल इन दो हिंदू संगठनों ने फिल्म पर रोक लगाई जाने के माँग की । उन्होंने दावा किया कि फिल्म का चित्रण जातियों के बीच सामूहिक हिंसा को तोड मरोडकर पेश किया है।''[15]

निष्कर्ष

हिंदू वर्ण व्यवस्था से निर्मित 'शुद्रों' पर आधारित यह फिल्म प्रदर्शन पूर्व व प्रदर्शन पश्चात चर्चा में रहीं। समीक्षकों ने भी इसे सराहा। परंतु सिनेमा घरों में इसकी अवस्था शुद्रों जैसी ही रहीं। सिनेमाघरों ने अपनी आप को बचाने के लिए फिल्म से किनारा कर लिया था। कुल मिलाकर कहा जा सकता है किए जिस 'शुद्र' समाज को फिल्म में दर्शाया गया उन्हीं की संगठनों के बलबुते पर फिल्म सिनेमाघरों में चल पाई। यह इस बात का दयोतक है कि भले ही वर्ण व्यवस्था का स्थूल रुप समाप्त हो गया हो परंतु सूक्ष्म रुप में अभी भी वह समाज के भीतर विदयमान है। यही इस फिल्म की प्रासंगिकता है।

*Two hindutva organisations - visava Hindu Parisad and Bajrang Dal demanded that the film not besown. They claimed that its portrayal would foment rivalry between csates and that its depiction for events was anachronistic. इसके बाद दलित संगठनों ने भी इसके प्रदर्शन के समर्थन में सामूहिक आंदोलन चलाए और फिर फिल्म रिलिज हुई।

संदर्भ सूची

1. कुलदीप सिन्हा, फिल्म निर्देशन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 68
2. https://youtu.be.be***06***uaLyenQo3 date 06/01/2017
3. विभांशु दिव्याल, दलित की रोटी, संपादक– राजकिशोर आज के प्रश्न 18 दलित राजनीति की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, द्वितीय संस्करण, 2008, पृ. 72
4. http://youtu.be/EqD***2***rWptvol date 07/01/2017
5. विभांशु दिव्याल, दलित की रोटी, संपादक राजकिशोर, आज के प्रश्न 18 दलित राजनीति की समस्या, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, द्वितीय संस्करण, 2008 पृ. 72
6. http://youtu.be/EqD***2***rWptvol date 07/01/2017
7. http://youtu.be/EqD***2***rWptvol date 08/01/2017
8. ogÈ
9. ogÈ
10. ogÈ
11. ogÈ
12. http://youtu.be/EqD***2***rWptvol date 07/01/2017
13. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, जाति प्रथा का विनाश, संपादक राजकिशोर, आज के प्रश्न 13 जाति का जहर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण 2001, पृ. 11
14. http://youtu.be/EqD***2***rWptvol date 07/01/2017
15. http://en.m.wikipedia.org date 15/01/2017